सागर किनारे संबंधों की

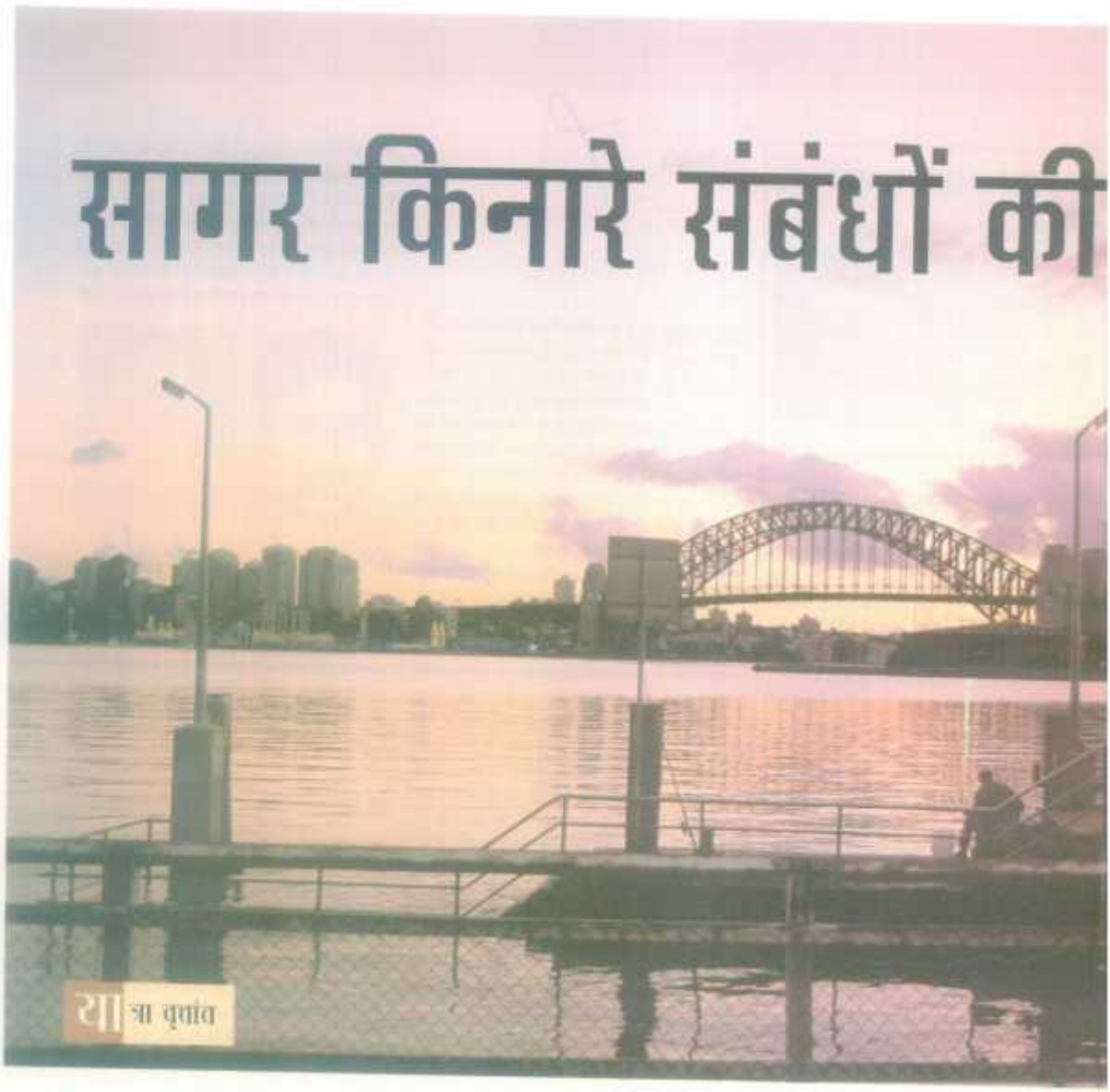

शिक्षा, पर्यटन और व्यापार के लिए भारतीयों के मन भा रहा है आस्ट्रेलिया, जहां न भेदभाव

आलोक मेहता

आस्ट्रेलिया के महानगर सिडनी में सुबह दस बजे पहली मुलाकात देश के शिक्षा, विज्ञान और प्रशिक्षण विभाग के मंत्री डॉ. ब्रेंडन नेल्सन से होनी थी। होटल से निकलने में 9.40 हो गए तो चिंता हुई कि कहीं हिंदुस्तानी लेटलतीफी की बुराई न सुननी पड़े। लेकिन निर्धारित समय से 5 मिनट पहले पहुंच गए। सामने प्रसिद्ध ओपेरा हाउस और सिडनी का प्रतीकनुमा हार्बर ब्रिज, ठंडी हवा तथा गुनगुनी धूप के बीच ठहरा समुद्र का पानी। बाईं ओर की पचास मंजिली इमारत के बजाय आस्ट्रेलियन विदेश सेवा के बबुआनुमा प्रशिक्षणार्थी युवा अधिकारी जेम्स हाल्टन दाईं ओर पानी की लहरों के किनारे ओपन रेस्तरां के काउंटर पर जाकर पूछताछ करने लगे तो हमें लगा, श्रीमान अभी मंत्रीजी के दफ्तर का ठिकाना ही नहीं जानते। सो, पूछताछ कर रहे हैं। लेकिन वे तुरंत लौटे और हमें उसी ढाबेनुमा रेस्तरां की एक टेबल की ओर ले जाने लगे। क्या कार्यक्रम बदल गया है? पूछने पर पता चला, "नहीं, मंत्रीजी यहीं आकर बात करने वाले हैं।" अपनी कुर्सियां खींचकर बैठे ही थे कि सड़क के उसी किनारे पर दो सज्जन आते दिखाई दिए। जेम्स ने फुर्ती दिखाई और उन्हें हमारी टेबल की ओर ले आया। ताम-झाम, कैमरा या फ्लाइट कमांडो, सायरन या घूमती रोशनीवाली कार का कोई अता-पता नहीं। रेस्तरां का छोटा-मोटा मैनेजर भी आगे नहीं बढ़ा, गीली टेबल साफ करते हुए एक वेटर अवश्य आया। नींबू पानी, चाय, काफी का आर्डर हुआ और सीधे काम की बातें।

आस्ट्रेलिया की शिक्षा व्यवस्था, 2025 तक की दूरगामी योजना, अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में श्रेष्ठ शिक्षा देने की तैयारियों, समस्याओं, खर्च और संभावनाओं पर लगभग एक घंटे तक बातचीत करते हुए डॉ. नेल्सन को न तो कोई कागज देखना पड़ा

लहरें

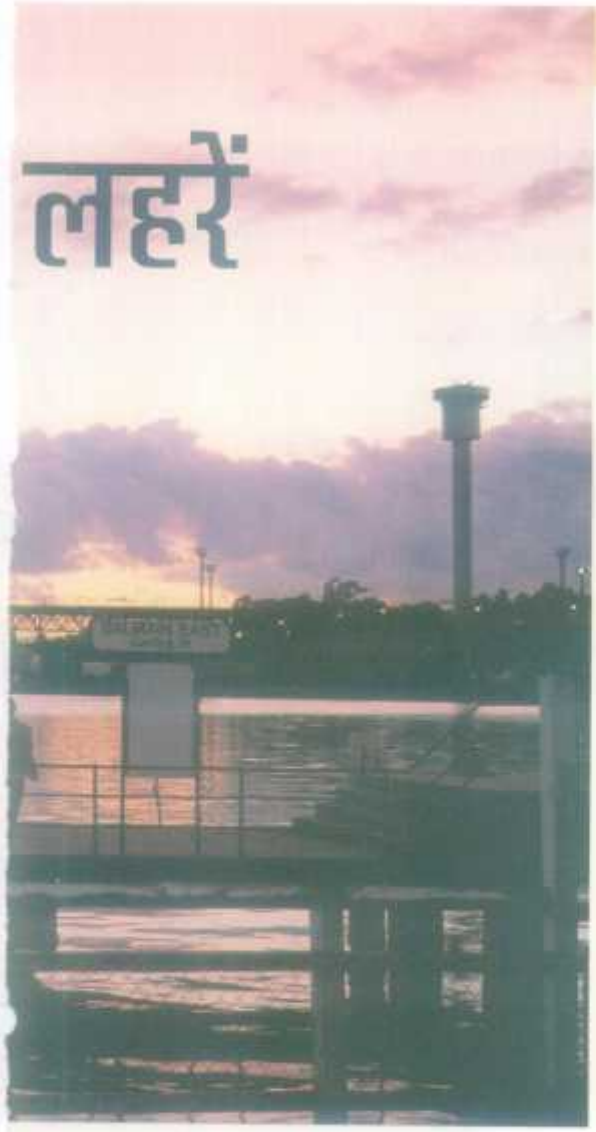

प्रकृति और संपन्नता का समन्वय: प्रसिद्ध हार्बर के साथ सिडनी का विहंगम दृश्य (बाएं), मिल-बांटकर खाने में भेदभाव नहीं और शिक्षा मंत्री डॉ. नेल्सन

भारत को लेकर डॉ. नेल्सन का विश्वास है कि अगले 20 वर्षों में आस्ट्रेलियाई शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े भारतीय छात्रों की संख्या दुगुनी यानी 90 हजार से अधिक हो जाएगी। सरकार आस्ट्रेलियाई छात्रों को भी भारत में शिक्षा पाने के प्रोत्साहन कार्यक्रम चला रही है।

महसूस होता है और न ही आर्थिक दबाव

और न ही साथ आए एक सहयोगी स्वास्थ्यकार से कुछ सहायता लेनी पड़ी। आस्ट्रेलिया में 15 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा अनिवार्य है। देश के 9,996 स्कूलों में से 72 प्रतिशत यानी 6,942 सरकारी हैं। कॉलेज और विश्वविद्यालयों में भी पढ़ाई अमेरिका की तरह महंगी नहीं है। डॉ. नेल्सन के अनुसार, उच्च शिक्षा पर पिछले वर्ष के बजट में सरकारी खर्च लगभग 6 अरब 40 करोड़ डॉलर था। यही कारण है कि दुनियाभर में आस्ट्रेलियाई विश्वविद्यालयों की ओर आकर्षण बढ़ रहा है। अमेरिका में जहां लगभग पांच लाख विदेशी छात्र होते हैं। आस्ट्रेलियाई शैक्षणिक संस्थानों में भी 2 लाख विदेशी छात्र पढ़ने लगे हैं। इसी कारण आस्ट्रेलिया की अर्थव्यवस्था में शिक्षा क्षेत्र से करीब 4 अरब 20 करोड़ आस्ट्रेलियन डॉलर की आमदनी होती है जो 20 वर्ष बाद 34 अरब डॉलर तक पहुंचने की आशा है। सन् 2025 तक करीब 9 लाख 96 हजार विदेशी छात्रों के आस्ट्रेलियाई शैक्षणिक संस्थानों से जुड़ने का अनुमान सरकार लगा रही है। इसके अलावा लगभग 5 लाख 60 हजार छात्र अपने देश में रहकर भी इन संस्थानों से शिक्षा प्राप्त करने लगेंगे। भारत सहित एशियाई देशों में भी यह भाग 83 प्रतिशत से 92 प्रतिशत हो जाने का अनुमान है। भारत को लेकर डॉ. नेल्सन बेहद उत्साहित हैं। उनका विश्वास है कि अगले 20 वर्षों में आस्ट्रेलियाई शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े भारतीय छात्रों की संख्या दुगुनी यानी 90 हजार से अधिक हो जाएगी। यही नहीं, सरकार आस्ट्रेलियाई छात्रों को भारत में शिक्षा पाने के प्रोत्साहन कार्यक्रम भी चला रही है। उनका मानना है कि प्रजातांत्रिक देशों में संबंधों को प्रगाढ़ करने का सबसे महत्वपूर्ण रास्ता यही है कि शिक्षा का प्रवाह खुला हो। भारत में भी अब अच्छे शैक्षणिक संस्थान खड़े हो गए हैं और प्रतिभावान योग्य लोगों की कमी नहीं है।

महत्वाकांक्षी सपनों को तोड़ते हुए मैंने डॉ. नेल्सन का ध्यान इस सवाल की ओर दिलाया कि 'आस्ट्रेलिया में पढ़ने-लिखने के बाद छात्रों को नौकरी न मिलने तथा उन्हें टैक्सी चलाने या होटल में वेटर बनने की स्थितियां क्यों दिखाई देती हैं?' भारत में तो यहां तक कहा जाता है कि आस्ट्रेलिया के कुछ विश्वविद्यालयों की डिग्रियों

4 85 (in brackets)

उन्हें रंगभेद या हीनता की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता। रॉयल मेलबार्न इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में तो विभिन्न देशों के छात्रों के बीच दिखी समरसता अद्भुत है। भारतीय छात्रों की एसोसिएशन के अध्यक्ष सिद्धार्थ कपूर ने कहा कि हर देश के छात्रों के कक्ष बने हुए हैं। लेकिन एक-दूसरे के कार्यक्रमों में शामिल होना सामान्य बात है। जर्मनी, फ्रांस और अमेरिका के छात्र भी विशेष उत्सवों पर एशियाई देशों के झंडे लेकर मार्च तक करते हैं। इस मामले में आस्ट्रेलिया यूरोप तथा अमेरिका से भी बेहतर स्थिति में लगता है। अपनी लगभग नौ दिन की यात्रा में न तो हमें कहीं कोई कटु अनुभव हुआ और न कोई शिकायत करता मिला।

भारतीय प्रतिभा को सही सम्मान मिलने का अनुमान इसी बात से लगा कि लगभग पश्चिमी संस्कृति में रंगे इस देश के आधुनिकतम शहर सिडनी के ओपेरा हाउस तथा मेलबोर्न के फेडरल स्क्वेयर को अधिक आकर्षक बनाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भारतीय वास्तुकार ध्रुवज्योति घोष को मिली है। ध्रुवज्योति अपनी पत्रकार पत्नी नीना भंडारी के साथ कुछ वर्ष पहले ही वहां जाकर बसे हैं और उन्हें न केवल आस्ट्रेलिया में वरन अन्य देशों में भी लाइटिंग डिजाइन के विशेषज्ञ के रूप में काम मिलता रहता है। बचपन से पोलियो की शिकार होने के कारण चलने में थोड़ी कठिनाई होने के बावजूद नीना भंडारी पूरे आत्मविश्वास और सम्मान के साथ आस्ट्रेलियाई नेताओं और अधिकारियों के बीच घूमती हैं। इसी तरह मेलबोर्न में लगभग 50 वर्षों से बसे पी.डी. धर परिवार के शानदार वाइनयार्ड और परिवार के सदस्यों की सफलता भी भारतीयों का मन प्रसन्न करती है। दूसरी पीढ़ी के क्रिस्टोफर धर और उनके पारिवारिक मित्र शब्बीर वाहिद आस्ट्रेलिया को भारत से अधिकाधिक जोड़ने को बेताब लगते हैं। यारा घाटी में बुक एस्टेट स्थापित कर धर परिवार ने 7 वर्षों के दौरान अंगूर और फलों से वाइन तैयार कर देश-विदेश में अच्छा नाम कमा लिया है।

भारत-आस्ट्रेलिया व्यापार परिषद के अध्यक्ष नीकोली रोस भी एक बहुराष्ट्रीय कंपनी

भारतीय आम पर से जल्दी ही प्रतिबंध हटने वाला है क्योंकि आस्ट्रेलियाई विशेषज्ञों ने लंबी-चौड़ी पड़ताल के बाद भारतीय आम के आस्ट्रेलिया में बिकने और खाए जाने से नुकसान के बजाय लाभ होने की पुष्टि कर दी है।

के प्रमुख हैं और उन्हें भारत के साथ आर्थिक संबंधों की अपार संभावनाएं दिखाई देती हैं। पिछले पांच वर्षों में भारत-आस्ट्रेलिया व्यापार संबंधों में उतार-चढ़ाव आए हैं तब भी 1 अरब 80 करोड़ डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार नई आशा जगाता है। व्यापार की बात आई तो आस्ट्रेलियाई मंत्रियों और अधिकारियों के सामने हमने भारतीय आम के प्रवेश पर लगे अंकुश का मुद्दा उठाया। सर्वोच्च स्तर के व्यक्तियों से यह उत्तर सुनकर कुछ संतोष हुआ कि बहुत जल्द यह प्रतिबंध हटने वाला है। आस्ट्रेलियाई विशेषज्ञों ने लंबी-चौड़ी पड़ताल के बाद भारतीय आम के आस्ट्रेलिया में बिकने और खाए जाने से नुकसान के बजाय लाभ होने की पुष्टि कर दी है। इसी संदर्भ में यह जानकर कम आश्चर्य नहीं हुआ कि आस्ट्रेलिया में कुछ राज्यों के सेब तक अन्य राज्यों में बिकना तो दूर हवाई यात्रा में साथ ले जाने पर भी कड़ा प्रतिबंध है। विशेषज्ञों के अनुसार, ऐसे सेब अन्य राज्यों के लोगों की सेहत भले ही न खराब करें, वहां के फलों की गुणवत्ता खराब कर सकते हैं। फलों में ऐसा परायापन और अपनों की चिंता अनूठी है। ऐसे विवादास्पद आस्ट्रेलियाई सेब के भारत में प्रवेश पर भारत में अभी तो कोई अंकुश नहीं दिखता। शब्बीर वाहिद ने मुंबई वालों के लिए अवश्य अच्छी खबर बताई कि एशिया चार्टर्ड मुंबई के विभिन्न क्षेत्रों को आधुनिक नौकाओं से जोड़ने वाली फेरी सर्विस चलाने की तैयारी कर चुकी है और वह दिन दूर नहीं जब ट्रैफिक जाम तथा सड़क-रेल मार्ग की कठिनाइयों से हटकर लोग कम समय में एक किनारे से दूसरे किनारे तक पहुंच सकेंगे।

फिल्मी हस्तियों को रिझाने और आस्ट्रेलिया से जोड़ने के लिए भी इन दिनों मुंबई से सिडनी तक सक्रियता दिख रही है। सिडनी के विश्व प्रसिद्ध फॉक्स स्टूडियो में टिम बेकर और हेमंत वर्मा ने इसी अभियान की चर्चा विस्तार से की। सिडनी के 'बोंडी बीच' पर शूट होने वाले सीरियल 'बे वाच' की लोकप्रियता भारत में भी कम नहीं है। इस समुद्री तट पर सचमुच खतरनाक मछलियों से बचने के 'सुरक्षित क्षेत्र' चिह्नित